



2026:AHC: 175136

इलाहाबाद उच्च न्यायालय

बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट याचिका संख्या - 971 वर्ष 2026

प्रिंस राजभर (अवयस्क)

.....याचिकाकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य और 3 अन्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

याचिकाकर्ता(गण) के अधिवक्ता : मणिक चंद्र यादव

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता : चंद्र जीत यादव, शासकीय अधिवक्ता

न्यायालय संख्या- 73

माननीय न्यायमूर्ति संदीप जैन

आदेश दिनांक 29.07.2026 के माध्यम से, राज्य को बंदी (कार्पस), प्रिंस राजभर को इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया था। पूर्वोक्त आदेश के अनुपालन में, थाना मेहनगर, जिला आजमगढ़ के थानाध्यक्ष श्री अभिराज सरोज द्वारा बंदी (कार्पस) को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

इस न्यायालय ने व्यक्तिगत रूप से बंदी (कार्पस), प्रिंस राजभर से बातचीत किया। बातचीत के दौरान, उसने खुलासा किया कि उसकी आयु लगभग 18 वर्ष है और उसने स्वेच्छा से प्रत्यर्थी संख्या 3, सुमन राजभर के साथ अपना विवाह संपन्न किया है। उसने आगे कहा कि अपने विवाह के पश्चात, वह अपने वैवाहिक घर में उसके साथ रह रहा है और वह न तो अवैध निरुद्धि में है और न ही किसी व्यक्ति के किसी अवैध प्रतिबंध के अधीन है। उसने स्पष्ट रूप से अपनी पत्नी, सुमन राजभर के साथ रहना जारी रखने की इच्छा व्यक्त किया।

बंदी (कार्पस) ने आगे कहा कि उसके माता-पिता उसके विवाह के विरोधी हैं और उसकी पत्नी को स्वीकार करने या उसके साथ रहने के इच्छुक नहीं हैं, क्योंकि यह विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और शासकीय उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



संपन्न हुआ था। फिर भी, उसने स्पष्ट कर दिया कि उसने सचेत रूप से और स्वेच्छा से सुमन राजभर से विवाह करने का विकल्प चुना है और अपनी पसंद के अनुसार उसके साथ रहना चाहता है।

इस न्यायालय ने याचिकाकर्ता, मंत्रिका और उसके पति से भी बातचीत किया, जो बंदी (कार्पस) के माता-पिता हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि बंदी (कार्पस) ने वयस्कता प्राप्त कर ली है और आगे कहा कि उसने उनकी इच्छा के विरुद्ध प्रत्यर्थी संख्या 3, सुमन राजभर के साथ विवाह कर लिया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि प्रत्यर्थी ने उन्हें गंभीर परिणामों की धमकी दी थी। पूर्वोक्त परिस्थितियों के कारण, उन्होंने अपनी बहू के साथ रहने या उसे स्वीकार करने की अपनी अनिच्छा व्यक्त की।

न्यायालय ने प्रत्यर्थी संख्या 3, सुमन राजभर से भी बातचीत किया, जिसने खुलासा किया कि उसकी आयु लगभग 19 वर्ष है। उसने कहा कि उसने स्वेच्छा से बंदी (कार्पस), प्रिंस राजभर के साथ अपना विवाह संपन्न किया है, और वह अपने वैवाहिक घर में उसके साथ रहना चाहती है। न्यायालय के समक्ष उसका बयान स्पष्ट, निश्चित और असंदिग्ध था।

बंदी (कार्पस) और अन्य पक्षकारों के साथ बातचीत से, यह न्यायालय संतुष्ट है कि प्रिंस राजभर ने वयस्कता प्राप्त कर ली है और वह अपने व्यक्तिगत जीवन और निवास के संबंध में निर्णय लेने के लिए सक्षम है। उसने सचेत रूप से और स्वेच्छा से सुमन राजभर के साथ अपना विवाह संपन्न किया है और उसके साथ रहने की अपनी स्पष्ट इच्छा व्यक्त किया है। अभिलेख पर ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह सुझाव दे कि उसका निर्णय दबाव, धमकी, अनुचित प्रभाव, प्रलोभन या किसी अन्य बाह्य विचार का परिणाम है।

यह भी समान रूप से स्पष्ट है कि बंदी (कार्पस) किसी भी व्यक्ति की अवैध या गैरकानूनी अभिरक्षा में नहीं है। बल्कि, वह स्वेच्छा से और अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार अपनी पत्नी के साथ रह रहा है। केवल यह तथ्य कि उसके माता-पिता उसके विवाह से असहमत हैं या उसकी पत्नी को स्वीकार नहीं करते हैं, बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट के माध्यम से इस न्यायालय के असाधारण क्षेत्राधिकार का आह्वान करने के लिए अपने आप में कोई आधार नहीं बन सकता है।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और शासकीय उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका में इस न्यायालय का क्षेत्राधिकार मुख्य रूप से किसी व्यक्ति को अवैध या गैरकानूनी निरुद्धि से मुक्त कराना है। जहां बंदी (कार्पस), एक वयस्क और सक्षम व्यक्ति होने के नाते, न्यायालय के समक्ष उपस्थित होता है और अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ रहने की अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है, और उसकी स्वतंत्रता पर किसी गैरकानूनी प्रतिबंध को इंगित करने वाली कोई सामग्री नहीं है, तो बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट जारी करने का कोई मामला नहीं बनता है।

वर्तमान वाद में, बंदी (कार्पस) ने अपनी पत्नी, प्रत्यर्थी संख्या 3 के साथ रहने के लिए एक सचेत और स्वैच्छिक विकल्प चुना है। निवास स्थान और जीवनसाथी निर्धारित करने की उसकी व्यक्तिगत स्वायत्तता और स्वतंत्रता भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 द्वारा संरक्षित है। इस प्रकार की संवैधानिक रूप से गारंटीकृत स्वतंत्रता को केवल इसलिए कम नहीं किया जा सकता है क्योंकि उसका विकल्प उसके माता-पिता की इच्छाओं के विपरीत है।

पूर्वोक्त तथ्यों और परिस्थितियों के दृष्टिगत, बंदी प्रत्यक्षीकरण रिट जारी करने का कोई आधार नहीं बनता है। तदनुसार, वर्तमान याचिका **खारिज** की जाती है।

बंदी (कार्पस), प्रिंस राजभर, एक वयस्क और सक्षम व्यक्ति होने के नाते, विधि के अनुसार अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ और ऐसे स्थान पर रहने के लिए स्वतंत्र होगा जिसे वह चुन सकता है। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रता के उसके शांतिपूर्ण प्रयोग में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(न्यायमूर्ति संदीप जैन)

19 अगस्त, 2026

हिमांशु

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और शासकीय उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”